

पद ११८

(राग: जोगी मांड - ताल: धुमाळी)

गुज बोलवेना बाई। सुख सांगवेना बाई। स्फूर्ति आवरेना।
एकोऽहमात्मा गुज बोलवेना ॥ध्रु॥ नको उपदेश नाना। भागत्याग
लक्षण जाणा। ब्रह्मचि भेटे ब्रह्मा। स्फूर्ति आवरेना। एकोऽहमात्मा
गुज बोलवेना ॥१॥ अहमन्नमन्नादः। वेद बोले भेद निंदा। कुणी
आम्हां वंदा निंदा। स्फूर्ति आवरेना। एकोऽहमात्मा गुज
बोलवेना ॥२॥ आत्म प्रकाश अखण्ड। मृगजल माया बंड सदानंद
चिन्मार्ताण्ड। स्फूर्ति आवरेना। एकोऽहमात्मा गुज बोलवेना ॥३॥